

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शारीरिक क्षमता का उनकी शैक्षिक चिंता के संबंध में एक तुलनात्मक अध्ययन

पूनम¹, डॉ० सुरेखा चौहान²

¹ शोधकर्त्री, शारीरिक शिक्षा विभाग, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

² शोध निर्देशिका, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/njar.2026.12.3.12027>

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शारीरिक क्षमता का उनकी शैक्षिक चिंता के संबंध में एक तुलनात्मक अध्ययन। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं के मध्य उनकी शारीरिक क्षमता का अध्ययन करना। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं के मध्य उनकी शैक्षिक चिंता का अध्ययन करना तथा माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शारीरिक क्षमताओं तथा शैक्षिक चिंता के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात करना।

अनुसंधान की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये शोधकर्त्री ने अनुसंधान हेतु सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग करने का निश्चय किया। जनपद साउथ-वेस्ट नई दिल्ली के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं को शोध अध्ययन के लिए चुना गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श चयन के लिए 'रैंडम पद्धति' को प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में 400 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में 20 माध्यमिक विद्यालयों से रैंडम सैम्पलिंग द्वारा चुना गया। शोध में शोधकर्त्री द्वारा माध्यिका, सांख्यिकी विधि द्वारा छात्राओं को उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं के आधार पर दो वर्गों में बांटा गया।

शारीरिक क्षमता मापन के लिए चयनित शारीरिक क्षमता घटक परीक्षणों का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक चिंता मापन के लिए डॉ० ए०के० सिंह तथा डॉ० ए० सेन गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक चिंता मापन का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के परिणाम प्राप्ति हेतु मध्यमान, माध्यिका, मानक विचलन, 'टी' टेस्ट, क्रांतिक अनुपात तथा सह-सम्बन्ध सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं के मध्य उनकी शारीरिक क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें उच्च शारीरिक क्षमता वाली छात्रायें निम्न शारीरिक क्षमता वाली छात्राओं से शारीरिक क्षमता में श्रेष्ठ हैं।

शोध अध्ययन से यह पता चलता है कि उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं के मध्य में उनकी शैक्षिक चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है परन्तु मध्यमान की दृष्टि से यह पता चलता है कि उच्च शारीरिक क्षमताओं वाली छात्रायें निम्न शारीरिक क्षमताओं की अपेक्षा शैक्षिक चिंता में बेहतर हैं। शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि छात्राओं के शारीरिक क्षमता तथा शैक्षिक चिंता के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध है।

मूलशब्द: शारीरिक क्षमता, शैक्षिक चिंता।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला-कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे उठने-बैठने, चलने-फिरने, खाने-पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। जब वह तीन-चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ना-लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा बड़े सुनियोजित ढंग से चलती है। विद्यालय के साथ-साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता रहता है और सीखने-सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन भर चलता है। और विस्तृत रूप में देखें तो किसी समाज में शिक्षा की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। अपने वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने-सिखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है।

प्राचीनकाल में शारीरिक शिक्षा के दो स्थूल मान्य थे

पहला हठ यौगिक क्रियायें, दूसरा सुरक्षा के शारीरिक कौशल का प्रदर्शन। प्रथम रूप की शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति करना था। हठयौगिक क्रियायें मनुष्य को 'पूर्णपुरुष' की स्थिति तक पहुँचने में सफल थी। आज भी शारीरिक शिक्षा के इस रूप के महत्व को सारा संसार स्वीकार करता है। शारीरिक शिक्षा का दूसरा रूप सुरक्षा की दृष्टि से निर्मित किया गया था। प्राचीनकाल में युद्धों में शारीरिक शक्ति का बड़ा महत्व था शारीरिक शक्ति को विकसित करने के लिये प्रत्येक अंग को पुष्ट और बलिष्ठ बनाने के लिये विविध प्रकार के व्यायाम थे। शारीरिक शिक्षा का तीसरा रूप मनोरंजन के लिये प्रयुक्त किया जाता था। इसमें विविध प्रकार के शारीरिक कौशल सिखाने का प्रावधान था, इसमें नर विद्या का प्रमुख स्थान था इस प्रकार प्राचीनकाल की शारीरिक शिक्षा पद्धतियों में हठ यौगिक क्रियाओं को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था और यह शारीरिक शिक्षा पद्धति मनुष्य को जीवन जीने की कला में पूर्ण रूप से प्रशिक्षित करने में कृत कार्य कर रही थी। आज विज्ञान के विकास के साथ तथा परिस्थितियों के परिवर्तन के कारण इसको सर्वथा उपयुक्त शारीरिक शिक्षा में रूपान्तरण आवश्यक हो गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

संबंधित साहित्य का अध्ययन एक मार्गदर्शक का कार्य करता है जिससे पता चलता है कि अमुक विषय पर कितना शोधकार्य हो चुका है और कितने की ओर आवश्यकता है। यथोचित संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के बाद ही शोध विषय से संबंधित परिकल्पना का निर्माण भी सम्भव हो पाता है। इस प्रकार शोधकार्य की योजना बनाने के लिये उससे संबंधित साहित्य का अध्ययन करना लाभप्रद रहता है। किसी भी क्षेत्र विशेष की सूक्ष्म जानकारी के लिये उससे संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अनिवार्य तथ्य है। इससे शोध में किसी आवश्यक जानकारी के खारिज होने का खतरा कम हो जाता है। शोधकार्य को और परिष्कृत करने के लिये भी पूर्व साहित्य का अध्ययन अति आवश्यक है।

वर्मा (2002) ने 'पूर्वी दिल्ली के सरकारी सहायता प्राप्त, पब्लिक और सरकारी स्कूलों की सीनियर सेकेंडरी छात्राओं के बीच शारीरिक फिटनेस के स्तर की तुलना' पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य छात्राओं के शारीरिक फिटनेस स्तर की तुलना करना था। अध्ययन के लिए 150 छात्राओं को रैंडम तरीके से चुना गया। ये छात्राएं पूर्वी दिल्ली के सरकारी सहायता प्राप्त (50 छात्राएं), पब्लिक (50 छात्राएं) और सरकारी (50 छात्राएं) स्कूलों की 11वीं कक्षा की छात्राएं थीं। इस अध्ययन के लिए AAHPER यूथ टेस्ट का इस्तेमाल किया गया। अध्ययन के नतीजों से पता चला कि सरकारी सहायता प्राप्त, पब्लिक और सरकारी स्कूलों की छात्राओं की शारीरिक फिटनेस में कोई खास अंतर नहीं था।

कु0 कुमुद रानी, शिखा चर्तुवेदी, अजय कुमार (2014) शारीरिक शिक्षा एवं सामान्य शिक्षा के विद्यार्थियों में चिंता का स्तर एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन मुख्य परीक्षा से पूर्व चिंता ग्रस्त शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थी व सामान्य शिक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होना परिकल्पित किया था। साथ ही नियन्त्रित घटकों के अन्तर्गत चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत 18 से 25 वर्ष तक की आयु के स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया है। तत्पश्चात 'सर्वेक्षण शोध पद्धति' का पालन करते हुये 'यादृच्छिक न्यादर्श विधि' से नमूनों का चयन किया और चिंता के मापन हेतु 'डॉ0 ए0के0पी0 सिन्हा' एवं 'डा0 एल0एन0के0 सिन्हा' द्वारा सन् 1995 में निर्मित चिंता परीक्षण (SCAT) प्रयोग कर मैनुअल से ज्ञात चिंता स्तर के सापेक्ष परीक्षोपरान्त विद्यार्थियों के गजट द्वारा प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधि मध्यमान, मानक विचलन व 'टी' परीक्षण को अपनाया गया। आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थी अपनी मुख्य परीक्षा से पूर्व अत्यधिक कम चिन्तित तथा सामान्य शिक्षा के अधिकतर विद्यार्थी अत्यधिक चिन्तित रहते हैं। इसलिये सामान्य शिक्षा के विद्यार्थियों की तुलना में शारीरिक शिक्षा के विद्यार्थी बड़े तर शैक्षिक उपलब्धि अर्जित करते हैं।

शिखा चर्तुवेदी, अजय कुमार, कु0 कुमुद रानी, (2014) "स्नातक स्तरीय शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों में परीक्षा से पूर्व व्याप्त चिंता का स्तर तथा परीक्षा उपरान्त उनकी शैक्षिक उपलब्धि का एक विश्लेषण" ने चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तरीय 18 से 25 वर्ष की आयु के पुरुष व महिला वर्ग के कुल 100 विद्यार्थियों को संयोगी प्रतिदर्श चयन पद्धति द्वारा मुख्य परीक्षा से पूर्व चयनित किया गया। ओर चिंता मापन हेतु 'डा0 ए0के0पी0 सिन्हा' एवं 'डा0 एल0एन0के0 सिन्हा' का 'चिंता परीक्षण' (SCAT) का उपयोग कर आँकड़ों को संकलित किया तथा इनके विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधि 'मध्यमान' को अपनाया गया। आँकड़ों का विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि

शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत अत्यधिक चिंता ग्रस्त छात्राएँ अपना बेहतर परीक्षा परिणाम अर्जित करती हैं जबकि अधिक चिंता ग्रस्तता की स्थिति में छात्र अपना बेहतर परीक्षा परिणाम अर्जित करते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त शब्द

शारीरिक क्षमता— शारीरिक क्षमता का मतलब है बिना थके लंबे समय तक काम करने और संकटकालीन समय में ऊर्जा बचाकर रखने की क्षमता, शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने से बीमार पड़ने या गंभीर चोट लगने का खतरा कम होता है, शारीरिक गतिविधि से मांसपेशियाँ और हड्डियाँ मजबूत होती हैं, नियमित शारीरिक गतिविधि से हृदय स्वास्थ्य में सुधार होता है। बिना किसी थकान के लम्बे समय तक कार्य करने और संकटकालीन समय के लिए ऊर्जा को बचाये रखने की क्षमता को शारीरिक क्षमता कहते हैं।

शैक्षिक चिंता— शैक्षिक चिंता के लक्षणों को पहचानना मुश्किल हो सकता है। शारीरिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ, जैसे पेट दर्द या सिरदर्द, ठीक से न सो पाना या खाना न खा पाना, मूड में बदलाव, जैसे— रोना, गुस्सा होना या अलग— थलग रहना, स्कूल जाने या परीक्षाओं के बारे में बात करने में अनिच्छा, अपने काम पर ज्यादा समय देना या स्कूल से बचना, अपने प्रति और अपनी गलतियों के प्रति ज्यादा आत्म-आलोचनात्मक रहना, चिंता का असररू चिंता का असर अकादमिक प्रदर्शन पर पड़ता है। ज्यादा चिंता से एकाग्रता और याददाश्त पर असर पड़ता है, जिससे अकादमिक सफलता में बाधा आती है, हालांकि, कुछ मात्रा में चिंता प्रेरणा पैदा करती है और अकादमिक प्रदर्शन में मदद करती है एवं गणित की चिंता: गणित से जुड़ी चिंता, गणित से जुड़ी जानकारी और कामों को संसाधित करने में बाधा डालती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शारीरिक शिक्षा के द्वारा काया को पुष्ट और स्वस्थ बनाया जा सकता है। पुष्ट का अर्थ है ऐसा शरीर जो शारीरिक श्रम करने से कष्ट का अनुभव न कर सुख का अनुभव करता है। समाज में फैली अकर्मण्यता का मूल कारण यही है कि आदमी शारीरिक दृष्टि से पुष्ट नहीं है वह थोड़े श्रम से, परिश्रम से ही थककर चूर हो जाता है जिसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह पड़ता है कि वह श्रम करने से कतराने लगता है इस पलायन प्रवृत्ति से समाज की श्रम करने की क्षमता का ह्रास होने लगता है। श्रम से ही विश्राम के उपकरण प्राप्त किये जा सकते हैं। जीवन—यापन की सारी आवश्यकताएँ श्रम पर आश्रित हैं। किसी दैवी विधा से आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती। अतः समाज की समृद्धि के लिये पुष्ट काया नितान्त आवश्यक है। पुष्ट काया स्वस्थ भी होती है, रोगों के विरोध की उसमें क्षमता रहती है। गर्मी, सर्दी, वर्षा को सहने अथवा झेलने की उसमें शक्ति होती है। वह भी वस्तुओं का आनंद लेती है। परन्तु शरीर को पुष्ट रखने और स्वस्थ रखने में जो लाभ प्राप्त होते हैं उसकी विशेषताएँ बड़ी फलप्रद होती हैं। आवश्यकताओं को जुटाने तथा प्रकृति को झेलने की क्षमता वाली काया मनुष्य के मनोजगत और आत्मजगत में सहज ही रूपान्तरण करने लगती है कहावत है कि— 'स्वस्थ काया में स्वस्थ मन निवास करता है' और स्वस्थ मन आत्मा को पाने का द्वार है। पुष्ट शरीर मन और आत्मा को पुष्ट बनाकर मनुष्य में आत्म विश्वास को दृढ़ बनाता है। आत्मविश्वासी के लिये जीवन की सारी समस्याएँ खेल बन जाती हैं और उसका जीवन सुखमय तथा शान्ति से व्यतीत होता है।

शोधकर्ता द्वारा जनपद साउथ—वेस्ट नई दिल्ली के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शारीरिक क्षमता का उनकी शैक्षिक चिंता के संबंध में एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

शिक्षाविद, प्राप्त निष्कर्षों से छात्राओं की शारीरिक क्षमता तथा शैक्षिक चिंता में वृद्धि करने से संबंधित अपनी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाने के लिये प्रेरित होंगे। विभिन्न स्तर की शिक्षा समितियों को पाठ्यक्रम निर्माण एवं आवश्यक सुधार हेतु सुझाव प्राप्त हो सकेंगे। इसके परिणाम छात्राओं की कार्य शक्ति के विकास में सहायक सिद्ध होंगे।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं के मध्य उनकी शारीरिक क्षमता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं के मध्य उनकी शैक्षिक चिंता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं की शारीरिक क्षमताओं तथा शैक्षिक चिंता के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ

शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं को लिया गया—

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं में उनकी शारीरिक क्षमता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं में उनकी शैक्षिक चिंता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के शारीरिक क्षमता तथा शैक्षिक चिंता के मध्य कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है।

शोध अभिकल्प

अनुसंधान की प्रकृति एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुये शोधकर्त्री ने अनुसंधान हेतु सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग करने का निश्चय किया। जनपद साउथ-वेस्ट नई दिल्ली के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं को शोध अध्ययन के लिए चुना गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श चयन के लिए 'रैंडम पद्धति' को प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन में 400 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में 20 माध्यमिक विद्यालयों से रैंडम सैम्पलिंग विधि द्वारा चुना गया। शोध में शोधकर्त्री द्वारा माध्यिका, सांख्यिकी विधि द्वारा छात्राओं को उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं के आधार पर दो वर्गों में बांटा गया।

शारीरिक क्षमता मापन के लिए चयनित शारीरिक क्षमता घटक परीक्षणों का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक चिंता मापन के लिए डॉ0 ए0के0 सिंह तथा डॉ0 ए0 सेन गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक चिंता मापन का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के परिणाम प्राप्ति हेतु मध्यमान, माध्यिका, मानक विचलन, 'टी' टेस्ट, क्रान्तिक अनुपात तथा सह-सम्बन्ध सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1: उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमता वाली छात्राओं के मध्य शारीरिक क्षमता

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात (सी0आर0 / टी-वैल्यू)	सार्थकता का स्तर 0.05
शारीरिक क्षमता	उच्च	200	57.07	8.92	24.77	सार्थक है।
	निम्न	200	31.29	11.70		

उपर्युक्त सारणी के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं की शारीरिक क्षमता के मध्य क्रान्तिक अनुपात (सी0आर0 / टी-वैल्यू) 24.77 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं

निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं में उनकी शारीरिक क्षमता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।" अस्वीकृत की जाती है अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमता वाली छात्राओं में उनकी शारीरिक क्षमता के मध्य सार्थक अन्तर है।

सारणी 2: उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमता वाली छात्राओं के मध्य शैक्षिक चिंता

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात (सी0आर0 / टी0वैल्यू)	सार्थकता का स्तर 0.05
शैक्षिक चिंता	उच्च	200	10.91	4.30	.475	सार्थक नहीं है।
	निम्न	200	10.69	5.13		

उपर्युक्त सारणी के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमता वाली छात्राओं में उनकी शैक्षिक चिंता के मध्य क्रान्तिक अनुपात (सी0आर0 / टी-वैल्यू) .475 है जो कि .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च एवं

निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं में उनकी शैक्षिक चिंता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।" स्वीकृत की जाती है अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमता वाली छात्राओं में उनकी शैक्षिक चिंता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 3: छात्राओं के शारीरिक क्षमता तथा शैक्षिक चिंता के मध्य सह-सम्बन्ध

चर	संख्या	सह-सम्बन्ध गुणांक
शारीरिक क्षमता	400	.330 सार्थक है।
शैक्षिक चिंता	400	

उपर्युक्त सारणी के अनुसार माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के शारीरिक क्षमता तथा शैक्षिक चिंता के मध्य

सह-सम्बन्ध गुणांक .330 है जोकि सार्थक है। अतः परिकल्पना की "माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के शारीरिक क्षमता

तथा शैक्षिक चिंता के मध्य कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं है।”
अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं के मध्य उनकी शारीरिक क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें उच्च शारीरिक क्षमता वाली छात्रायें निम्न शारीरिक क्षमता वाली छात्राओं से शारीरिक क्षमता में श्रेष्ठ हैं।

शोध अध्ययन से यह पता चलता है कि उच्च तथा निम्न शारीरिक क्षमताओं वाली छात्राओं के मध्य में उनकी शैक्षिक चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं है परन्तु मध्यमान की दृष्टि से यह पता चलता है कि उच्च शारीरिक क्षमताओं वाली छात्रायें निम्न शारीरिक क्षमताओं की अपेक्षा शैक्षिक चिंता में बेहतर हैं। शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि छात्राओं के शारीरिक क्षमता तथा शैक्षिक चिंता के मध्य सार्थक सह-सम्बन्ध है।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

जनपद साउथ-वेस्ट नई दिल्ली के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं को शोध अध्ययन के लिए चुना गया है। इसे अन्य जनपदों, मण्डलों के विद्यार्थियों को लेकर भी किया जा सकता है। शोधकर्ती ने अपने शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं को ही शामिल किया है। यह शोध कार्य अन्य स्तर के विद्यालयों पर भी किया जा सकता है। शोधकर्ती ने अपने शोध में शारीरिक क्षमता, शैक्षिक रुचि चरों को सम्मिलित किया है। इसके अतिरिक्त अन्य चरों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है। शोधकर्ती ने अपने शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् 400 छात्राओं को सम्मिलित किया है। भविष्य में इससे अधिक छात्र-छात्राओं को लिया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. शर्मा, एन0पी0 (2005). शिक्षा में शारीरिक शिक्षा. नई दिल्ली खेल साहित्य केन्द्र।
2. कुमार, अजय (2008). ए स्टडी ऑफ इनवाल्वमेन्ट एण्ड पार्टिशिपेशन इन फिजिकल ऐजुकेशन एक्टिविटीज ऑफ बॉयज एण्ड गर्ल्स विद रेस्पैक्ट टू साईंस एण्ड आर्ट्स स्टूडेंट्स. पी-एच0डी0 थीसिस, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
3. पाण्डेय, लक्ष्मीकान्त (1977). शारीरिक शिक्षा की शिक्षण पद्धति. नई दिल्ली: मेट्रोपालिटन बुक कम्पनी।
4. कमलेश, एम0एल0 (2004). शारीरिक शिक्षा अध्यापक परीक्षा मैनुअल. एच0जी0 पब्लिकेशन।
5. तिवारी, मुकुल (2003). छात्र अध्यापकों के बीच शैक्षिक चिंता का एक अध्ययन। रिसर्च एण्ड स्टडीज, इलाहाबाद।
6. सॉविनियर ऑफ नेशनल सेमिनार ऑन इमेरजिंग ट्रेन्ड्स इन फिजिकल ऐजुकेशन (दिसम्बर-2006), पटियाला।
7. भगीरथी, समीर ई0 (2007). दक्षिण पश्चिम क्षेत्र के अन्तर विश्वविद्यालय की बास्केटबॉल खिलाड़ियों में खेल प्रतियोगिता चिंता का विश्लेषण। रिसर्च बॉय एनुअल फॉर मूवमेंट वॉल्यूम-23, नं0-2.